जापानी ट्रैक पर दौड़ेगी अंडरग्राउंड मेट्रो

मुंबई पहुंचा ३,६१५ मीट्रिक टन ट्रैक

सुजीत गुप्ता / मुंबई

मुंबई की पहली अंडरग्राउंड मेट्रो जापानी ट्रैक पर दौडेगी। इसके लिए जापान से करीब ३,६१५ मीट्रिक टन ट्रैक मंगलवार को समुद्री मार्ग से मुंबई पहुचा। ट्रैक के मुंबई आने के साथ आगामी कुछ महीनो मे ट्रैक बिछाने का काम शुरू कर दिया जाएगा। इस जापानी ट्रैक से अंडर ग्राउंड मेट्रो का सफर कंपन मुक्त होगा।

कोलाबा-बांद्रा-सिप्ज के बीच बन रहे ३३.५ किलोमीटर लंबे अंडरग्राउंड मेट्रो मार्ग को तैयार करने का काम तीव्र गति से चल रहा है। ३३.५ किमी मार्ग के लिए अप और डाउन दिशा को मिलाकर कुल ५५ किमी लंबा टनल तैयार हो रहा है। मेट्रो-३ कॉरिडोर के लिए मुंबई मे जमीन से करीब २० से २५ मीटर नीचे टनल तैयार किया जा रहा है। पूरे मार्ग

कंपन मुक्त होगा मेट्रो सफर

पर करीब १०,७४५ मीट्रिक टन ट्रैक का इस्तेमाल किया जाएगा। इसमे से पहले चरण के तहत मुंबई पोर्ट पर ३,६१५ मैट्रिक टन ट्रैक पहुच गया है, जबकि इस वर्ष के अंत तक ७,१२५ मीट्रिक टन ट्रैक दो चरणों मे मुंबई आएगा।

२२ प्रतिशत कम कंपन

मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अनुसार जापान से मुंबई आया यह ट्रैक विश्व का सबसे हाईटेक रेल ट्रैक है। हाई अटेंयूएशन लॉ वाइब्रेशन ट्रैक सिस्टम तकनीक से बने इस ट्रैक का भारत मे पहली बार मेट्रो-३ कॉरिडोर के लिए इस्तेमाल होगा। जो देश मे उपयोग मे आनेवाले अन्य ट्रैक की तुलना मे कम कंपन के साथ ट्रेन के गुजरने पर कम आवाज करेगा। एमएमआरसीएल के एमडी रणजीत सिंह देवल के अनुसार यह ट्रैक अन्य ट्रैक की तुलना मे अधिक सुरक्षित होने के साथ ही २० से २२ वीडीबी कम कंपन करेगा।

८३ प्रतिशत टनलिंग का काम पूरा

५५ किमी लंबे टनल मे से करीब ८३ प्रतिशत टनल तैयार हो गया है। पूरे मार्ग पर खुदाई का काम करीब ८५ प्रतिशत तक हो चुका है। मार्ग के साथ ही स्टेशनो का काम भी तेजी से चल रहा है। एमआईडीसी स्टेशन का ७१ प्रतिशत, मरोल नाका स्टेशन का ६७ प्रतिशत, विधानभवन स्टेशन का ६५ प्रतिशत और सिप्ज स्टेशन का काम का ५८ प्रतिशत तक पूरा कर लिया गया है। पूरे प्रॉजेक्ट का करीब ५६ प्रतिशत काम हो चुका है। एमएमआरसीएल ने ट्रैक बिछाने के काम के लिए लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के साथ पहले ही करार कर लिया है।

२८ टनल तैयार

३३ किमी लंबे कॉरिडोर के मार्ग पर कुल ३२ टनल तैयार होने हैं। टीबीएम मशीन की सहायता से ३२ मे से २८ टनल तैयार करने का काम पूरा हो गया है। एमएमआरसीएल ने आगामी कुछ महीनो मे टनल निर्माण का काम पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।